JUNI KHYAT
जूनी ख्यात

(सामाजिक विज्ञान, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका)

वर्ष : 10 • अंक 1

जुलाई-दिसम्बर 2020

A Peer-Reviewed and Listed in UGC CARE List

ISSN 2278-4632

संपादक

डॉ. बी. एल. भादानी

प्रोफेसर

प्रबंध संपादक

श्याम महर्षि

मरुभूमि शोध संस्थान

संस्कृति भवन

एन.एच. 11, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

मारवाड़ राजघराने के प्रमुख दग्ध स्थल

(राजघराने में देवलोक होने से पूर्व व पश्चात् की परंपराओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन)

• सूर्यवीर सिंह

मारवाड़ रियासत राजस्थान के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से चौथी[1] विशाल रियासत थी।[2] इसकी अधिकतर भौगोलिक संरचना मरूस्थलीय व जलहीन है। वैसे तो मारवाड़ प्रदेश पर कई राजवंशों का स्वामित्त्व रहा है, परन्तु राठौड़ वंश सर्वाधिक शासन करने वाला वंश हुआ। यह क्षेत्र कई विशिष्ट कारणों से विख्यात रहा है, चाहे वो संस्कृति व परंपराओं में समृद्ध होना हो अथवा स्वाभिमान के लिए प्राण न्योछावर करने वाली जातियों के विषय में हो, जो अपने-आप में समृद्ध विरासत संजोये हुए है।

मारवाड़ राजघराने में किसी सदस्य के परलोक होने के पूर्व व पश्चात् निभाई जाने वाली परंपराओं व रीति-रिवाजों का अवलोकन कर हम यहाँ की मान्यताओं को समझ सकते हैं। इस परंपरा का संबंध अन्त्येष्टि संस्कार से है और देखा जाए तो प्राचीनकाल से ही यहाँ के समाज में व्यक्ति, के व्यक्तित्त्व के उत्थापन के निमित संस्कारों[3] का संयोजन किया गया है तथा इनके विषय में हमें धर्मसूत्रों, स्मृतियों, उपनिषदों, गृह्यसूत्रों, पुराणों तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों में लिखा मिलता है, जिनमें इन संस्कारों की संख्या सोलह कही गई है तथा इसमें अन्त्येष्टि संस्कार अंतिम संस्कार माना गया है। अतः देवलोक होने पर निभाई जाने वाली परंपराओं तथा दग्ध-स्थल (श्मशान भूमि) का मानव जीवन के साथ अभिन्न हिस्सा माना गया है, जो राजशाही से लेकर आमजन के जीवन में बहुत ही संवेदनशील परंपरा का महत्त्वपूर्ण भाग है।

मारवाड़ राजघराने से संबंधित दग्ध स्थलों तथा देवलोक हो जाने से पूर्व व पश्चात् निभाई जाने वाली परंपराओं के विषय में हमें यहाँ की पुरालेखीय सामग्री मुख्यतः बहियों, ख्यातों, शिलालेखों आदि में प्रचुर जानकारी प्राप्त

होती है। इन स्रोतों से ज्ञात होता हैं कि इन घटनाओं पर किस प्रकार राजशाही परिवार व आमजन के बीच की भावनाएं व आपसी व्यवहार रहता था।

राज परिवार के किसी सदस्य के देवलोक गमन होने पर सर्वप्रथम उसके पार्थिव देह को शाही दग्ध-स्थलों पर पूर्ण परंपराओं को ध्यान में रखकर अग्नि सुपुर्द किया जाता था। राजघराने के दग्ध-स्थल पूर्व मारवाड़ की राजधानी जोधपुर में स्थित है, जो कि मूलतः चार स्थानों पर स्थित है, जो मण्डोर, पंचकुण्डा, कागा और जसवंत थड़ा शाही दग्ध-स्थलों के रूप में पहचाने जाते हैं।[4] इसमें 'मण्डोर दग्ध-स्थल' (देखें प्लेट सं. 1) सबसे पुराना है तथा प्रमुख रूप से मारवाड़ के शासकों को समर्पित है, जिनमें राव मालदेव से लेकर महाराजा तखतसिंह आदि के स्मारक हैं, परन्तु कुछ स्मारक उनके पुत्र व पुत्रियों के भी हैं, परन्तु मुख्यतः यह जगह शासकों के दग्ध स्थल के रूप में समर्पित रही है। यद्यपि इसमें कई शासकों के साथ उनकी रानियों के सती होने के प्रमाण पुरालेखीय स्रोतों से प्राप्त होते हैं, तथापि किसी का अलग से कोई स्मारक नहीं है। मण्डोर बाग में प्रमुखतः तीन प्रकार के स्मृति स्मारक दृष्टिगोचर होते हैं, जिसमें देवल थड़ा व छतरी प्रमुख हैं, जो ज्यादातर जोधपुर के घाटू पत्थर से निर्मित हुए हैं।

दूसरा प्रमुख दग्ध स्थल 'पंचकुण्डा' में स्थित है (देखें प्लेट सं. 1), जो मुख्यतः रानियों को समर्पित है, यहाँ की छतरियां विशाल आकार की तथा अति कलात्मक हैं, परन्तु इन छतरियों से थोड़ी दूरी पर 'राव गांगा का देवल' स्थित है, जो एक अपवाद माना जा सकता है। यहाँ पर छतरियों व चबूतरों की कुल संख्या छियालीस है, जिनमें से छत्तीस छतरियां रानियों को समर्पित है जो रानियों के स्वयं के निजी व्यय अथवा उनके रिश्तेदारों जो कि इसी राज-परिवार में विवाहित होते थे, विशेषकर बहन, भुआ व भतीजी आदि द्वारा बनवाई जाती थी। उदाहरण स्वरूप पाँचवी भटियाणी रानी की छतरी का निर्माण उनकी भतीजी भटियाणी इन्द्र कंवर द्वारा बनवाई गई थी। वे गोठड़ा के ठाकुर की पुत्री थी तथा 1856 ई. में महाराजा तखतसिंह के साथ विवाह हुआ था।

तीसरा दग्ध स्थल 'कागा बाग' के रूप में जाना जाता है। (देखें प्लेट सं. 1) यह बाग महाराजा जसवंतसिंह प्रथम द्वारा लगवाया गया था तथा अफ़गानिस्तान में पठानों के दमन से वापिस लौटते समय अपने साथ अनार के बीज लाए थे, वे उन्होंने इसी बाग में लगवाए थे। उनकी आज्ञा से स्वामिभक्त राजसिंह कूंपावत (प्रधान) का दाह संस्कार सर्वप्रथम यहीं पर किया गया।[5] तत्पश्चात् जोधपुर राज्य के उमरावों का यहीं पर अन्तिम संस्कार होने लगा

था तथा कागा बाग ने दग्ध-स्थल का रूप ले लिया था।[6] यहाँ के स्मारकों में छतरियां व चबूतरे प्रमुख हैं, जो घाटु पत्थर से निर्मित हैं। इन स्मारकों की संख्या लगभग सौ के करीब है, जिनमें अधिकतर शिलालेख लुप्त हो जाने के कारण, यह स्मारक किनको समर्पित है, ज्ञात करना असंभव है।

चौथा दग्ध-स्थल मेहरानगढ़ के नजदीक देवकुण्ड के समीप है, जो कि 'जसवंत थड़ा' के रूप में जाना जाता है। (देखें प्लेट सं. 1) यहाँ प्रथम बार महाराजा जसवंतसिंह द्वितीय की अंतिम इच्छा को देखते हुए इनका अंतिम संस्कार देवकुण्ड पर करने का निर्णय लिया गया था।[7] इसके पश्चात् राज परिवार के सभी सदस्यों का दाह संस्कार यहीं पर किया जाने लगा। महाराजा जसवंतसिंह का स्मारक बहुत भव्य है तथा मकराना के संगमरमर पत्थर का बना हुआ है तथा इसके समीप अन्य स्मारक संगमरमर, घाटू व छित्तर के पत्थरों से निर्मित हैं।

पुरालेखीय सामग्री से ज्ञात होता है कि जब नरेश के देवलोक होने की सूचना 22 परगनों के आखरी गाँवों तक पहुँचती थी तो आमजन भी शोकाकुल हो जाते थे। बारह दिन शोक रखा जाता था तथा लोग अपनी इच्छा से भदर (मुंडन) होते थे एवं शोकसूचक रंगों की पगड़ियां बांधते थे। बारह दिन शहर में दुकाने बंद रखी जाती थी, ददेरे, चंवालिए, रंगरेज, कसाई सभी अपने धंधे बारह दिनों तक बंद रखते थे तथा बंदियों को जेल से छोड़ने की भी परंपरा थी।

एक बार जब महाराजा गजसिंह प्रथम के पश्चात् जोधपुर में रानियों ने सती होने से पूर्व राघोदास को बुलाकर आज्ञा दी कि सौ कैदियों को छोड़ दिया जाए तब कैदियों में एक पंचोली बलू राघोदासोत था जिसने कैद से छूटने से इन्कार करते हुए कहा कि 'हूं घर जाऊ तो मारा घर रा खुशी हुवे।' सो महाराज रो सबो हुओ उण वक्त मारे घर में खुशी हुवे आ बात भली नहीं, जिणसू महाराज जसवंतसिंह छोडसी तरे छूटसू।[8] यह घटना आमजन की शासक के प्रति अपनत्व को इंगित करती है।

महाराजा तखतसिंह जी री ख्यात से ज्ञात होता है कि वि.सं. 1908 में माजी श्री बड़ा भदियाणी जी, जब मरणासन्न अवस्था में पहुँचे थे तब महाराजा तखतसिंह वहाँ गए थे, जिसका संदर्भ इस प्रकार है—

काती वद 9 माजी श्री बड़ा भटीयाणी जी नै खेद दीन 15 आई, सो आज जादा दबाव में आया रा समाचार मालम हुवा तरै श्री हजूर सा उणी

ISSN 2278-4632

बखत श्री माजीसा कनै पधारिया। श्री हजूर अरज करी कै आपरे कोई काम हुवै तथा कीणी री भोलावण देणी हुवै तो फुरमावौ? तरै फुरमायौ मुलक मारवाड़ री रईयत नै सिरदार, मुतसदी वगैरै रो प्रतपाल राखजो। पछै श्री हजूर साहब गांव 1 पुन करायौ, दोय हजार उपजतां रो। नै रोकड रूपीया जुदा कराया। पछै श्री माजीसा दिन दोढ पोर चढीया देवलोक हुवा।[9]

उसी प्रकार जब वि.सं. 1860 में महाराजा भीमसिंह का देहावसान हुआ था तब 500 मण धान, 500 रुपये रोकड़ तथा 500 गायें पुण्यार्थ संकल्प किए गए थे।[10] इसी प्रकार पुरोलेखीय सामग्री में अन्य शासकों व रानियों के मरणासन्न पर पुण्यार्थ के विषय में ज्ञात होता है। इसी प्रकार राज परिवार के सदस्य व अन्य संबंधित लोगों के विषय में भी जानकारी राज्य की *बहियों* व *ख्यातों* से प्राप्त होती है।

मारवाड़ राजघराने की शोक संबंधी परंपराओं से ज्ञात होता है कि गढ में नौबत बजाना बंद कर दिया जाता था, जिसकी अवधि मृत व्यक्ति के परिवार में हैसियत पर निर्भर करती थी। बारह दिन तक शोक संबंधी क्रियाकर्म चलते रहते थे और उसके पश्चात् नये उत्तराधिकारी की आणदुहाई[11] की जाती थी। नरेश का पाटवी पुत्र न तो शव यात्रा में जाता था और न ही मुंडन कराता था, हालांकि महाराजा हनवंतसिंह ने अपने पिता की मृत्यु के बाद इस परम्परा को तोड़ा और वे *भदर* हुए तथा दाह संस्कार में भी गए थे।

राजघराने में माजी व दादीजी की मृत्यु होने पर शव को पेटी में रखकर पंचकुण्डा ले जाकर दाग दिया जाता था[12] तथा साथ में जागीरदार, मुतसद्दी, वेदिया, पुरोहित, जोशी इत्यादि शव यात्रा में जाते थे। उनके शोक में एक प्रहर की नौबत बंद रखी जाती थी। दाह-संस्कार हो जाने की सूचना मिलने पर राजा गढ़ पर ही स्नान करते थे। हालांकि रानी व माजीसा के देवलोक होने पर निभाई जाने वाली रस्में उनके नोहरों पर की जाती थी और गढ में राग-रंग बारह दिनों तक नहीं किये जाते थे।[13]

देवलोक संबंधी क्रिया-कर्म जो दस दिन होते थे (तीसरे से बारहवें) उसमें राजपुरोहित की कोई भूमिका नहीं होती थी। देवलोक गमन संबंधी क्रिया-कर्म के नेग व दान व्यास व कारटिया लेते थे तथा गरूड़ पुराण कथा वाचन की राशी व्यास को दी जाती थी। हालांकि बारह दिन पूर्ण होने के पश्चात् राजपुरोहित द्वारा कुछ क्रिया-कर्म किए जाते थे, उसके लिए वे परंपरानुसार दक्षिणा लेते थे।[14]

अंतिम संस्कार के तीसरे दिन चिता को ठंडा करने की रस्म होती थी, जिसमें दूध व जल का छिड़काव दाह-स्थल पर किया जाता था। उसके पश्चात् फूलों (अस्थियों) को चुगकर पात्र में इकट्ठा किया जाता था। रानियों के फूलों की रखवाली और साथरवाड़ा का जिम्मा गागरिया खांप के राठौड़ों को दिया गया था। फूलों को हरिद्वार गंगा में विसर्जित किया जाता था। महाराजा भीमसिंह के फूलों के विषय में 'महाराजा मानसिंह री ख्यात' में मिलता है—'*जैपुर पैला ऊकील पंचोली सतावराय थौ जिण नुं तौ महाराज भीवसिंघ जी रा फूलां साथे गंगाजी मेलीयौ।*'[15] उसी प्रकार महाराजा मानसिंह के फूलों के विषय में मिलता है—'*संवत् 1901 रा मिगसर वद 3 बडा महाराज श्री मानसिंघ जी रा फूल श्री गंगाजी में पधरावण नै जय नै अगाड़ी गया जो करण नै जाय सो हुकम हुवो। फूलां री सारा ही जण भेंट निछरावल करो।*'[16]

वहीं बारह दिनों की रस्मों के विषय में 'रोजनामचा' बही में उल्लेख किया जाता था। इस समय खालसे की डावड़ियां (दासियां) बारह दिवस तक तलहटी के महलों के बरामदों में बैठकर शोक व्यक्त करती थी जहाँ शहर की स्त्रियाँ (मुतसदियों के घर से महिलाएं) शोक प्रकट करने आती थीं।[17]

महाराजा मानसिंह के राजलोक पांचवा भटियाणी जी की छतरी की कमठा बही के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्मृति स्मारक के नींव रखने से पूर्व राज वेदिया[18] से स्मारक निर्माण का मुहूर्त निकलवाया जाता था तथा मुहूर्त के दौरान नींव के पत्थर की पूजा का कार्यक्रम आयोजित किया जाता था। इसके पश्चात् ब्राह्मण भोज का आयोजन किया जाता था।[19] इस बही से ज्ञात होता है कि इसका स्थापत्य पूर्ण होने में दो वर्ष की अवधि लगी तथा देवली प्रतिष्ठा पर भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान भोज आयोजन हुआ तथा कारिगरों को भेंट दी गई।

इन स्मारकों के निर्माण में कई लोगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती थी, जिसमें गजधर से लेकर, चंवालिया, बैलदार, कारीगर, मेहरी, रंगरेज, कुम्हार आदि का योगदान रहता था जो विभिन्न जातियों से ताल्लुक रखते थे, इनका योगदान आज हमारे समक्ष एक समृद्ध विरासत के रूप में विद्यमान है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मारवाड़ का शाही दग्ध-स्थल तथा उस पर निर्मित स्मारक यहाँ की परंपराओं, संस्कृति व धार्मिक आस्थाओं का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है, जो कि यहाँ के शासकों की आमजन के साथ भावनात्मक संबंध व सामाजिक समरसता की ओर ध्यान इंगित करता है, इन दग्ध-स्थलों पर निर्मित स्मृति स्मारक यहाँ के आमजन के श्रद्धा का विषय रहे

हैं, इन पुरालेखीय जानकारी के अवलोकन से समाज में लिप्त धार्मिक संवेदनशीलता से जुड़े महत्त्वपूर्ण पहलुओं के विषय में ज्ञात होता है।

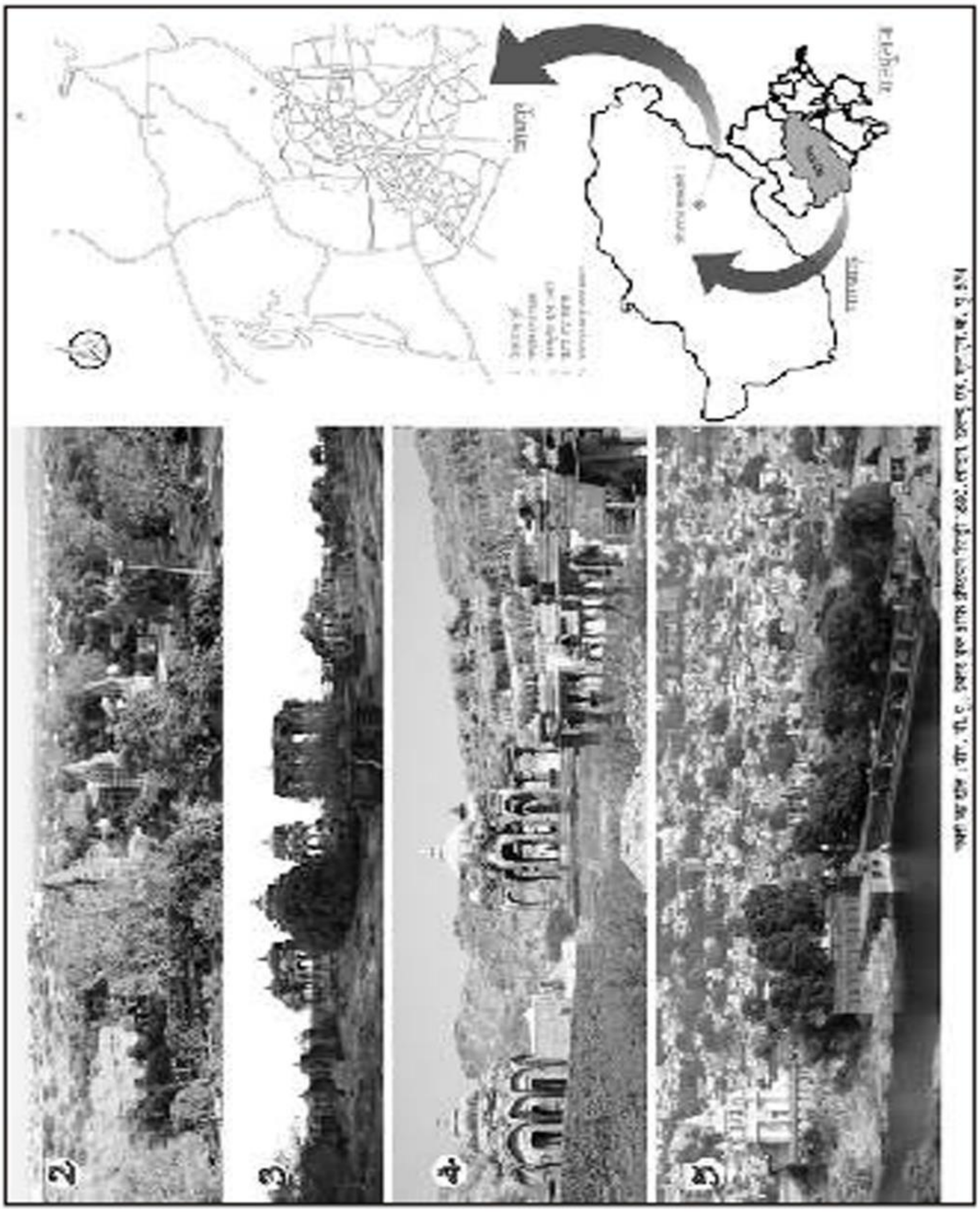

सन्दर्भ

1. प्रथम तीन थे हैदराबाद, कश्मीर तथा केलद।
2. बी.एन. रेऊ, *ग्लोरिज ऑफ मारवाड़ एण्ड ग्लोरियस राठौड़,* बुक ट्रेजर, भारतीय प्रकाशन, 2013, पृ. 1

3. मीमांसा के अन्तर्गत इसका अर्थ विधिवत शुद्धि है।
4. *मण्डोर, पंचकुण्डा, कागा और जसवंतथड़ा* की शोध यात्रा, दिनांक 17, 18, तथा 19 नवम्बर 2020
5. हुकमसिंह भाटी, *राजस्थान की संस्कृति और इतिहास के विविध आयाम,* राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2017, पृ. 247
6. वही, पृ. 247
7. *रसीलेराज* शोध पत्रिका, संपा. डॉ. महेन्द्रसिंह नगर, अंक 11, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, जोधपुर, 2013, पृ. 91
8. वही, पृ. 85,
9. *महाराजा तख्तसिंह री ख्यात,* ग्रन्थांक सं. 176, संपा. डॉ. नारायणसिंह भाटी, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1993, पृ. 135
10. *जोधपुर हकीकत बही,* नं. 08, वि.सं. 1856-1860, पत्र सं. 435, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।
11. नये राजा के नाम की सूचना।
12. लकड़ी की पेटी *कीलीखाना* विभाग से आती थी, जिससे ज्ञात होता है कि शव को संदूक में रखकर दग्ध-स्थल अंतिम संस्कार हेतु ले जाया जाता था।
13. *जोधपुर हकीकत* बही, नं. 08, वि.सं. 1856-1860, पत्र सं. 435, जोधपुर रिकॉर्ड्स
14. *रसीलेराज,* शोध पत्रिका, अंक 11, पृ. 88,
15. *महाराजा मानसिंह जी री ख्यात,* ग्रन्थांक सं. 133, संपा. डॉ. नारायणसिंह भाटी, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1997, पृ. 43
16. *महाराजा तख्तसिंह री ख्यात,* ग्रन्थांक सं. 176, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1993, पृ. 30
17. *रसीलेराज,* शोध पत्रिका, अंक 11, पृ. 88
18. जिसे वेदों को ज्ञान हो।
19. *महाराजा मानसिंह के राजलोक पांचवा भटियाणी साहिबा की छतरी की कमठा बही,* क्र.सं. 434, महाराज मानसिंह पुस्तक प्रकाश, मेहरानगढ़ दुर्ग, जोधपुर।

सूर्यवीर सिंह
पीएच.डी. स्कॉलर
डिपार्टमेन्ट ऑफ आर्ट हिस्ट्री
फेकल्टी ऑफ फाईन आर्ट्स
महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा, गुजरात

□□□

राजस्थान के समाज-संस्कृति में

अप्रकाशित शिलालेखों का महत्त्व

सम्पादक

डॉ. विक्रमसिंह भाटी

सहायक निदेशक

राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर

प्रकाशक

राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी

(ज.ना.व्यास वि.वि. से मान्यता प्राप्त शोध केन्द्र)

मेहरानगढ़ म्यूज़ियम ट्रस्ट

मेहरानगढ़ दुर्ग, जोधपुर

- प्रकाशक :
  राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर
  चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा संचालित
  एवं
  मेहरानगढ़ म्यूज़ियम ट्रस्ट
  पो.बॉ. 165, मेहरानगढ़ दुर्ग, जोधपुर

- **ISBN :**

- प्रथम संस्करण : 2021

- मूल्य :
  ₹700.00 (सात सौ रुपये) मात्र

- मुद्रक :
  राजस्थानी ग्रन्थागार
  सोजती गेट, जोधपुर,
  0291-2623933, 2657531

RAJASTHAN KE SAMAJ SANSKRITI MAIN

APRAKAASHIT SHILALEKHON KA MAHATTVA

Dr. Vikram Singh Bhati

Published By : Rajasthani Shodh Sansthan, Chopasni, Jodhpur & Mehrangarh Museum Trust, Mehrangarh Fort, Jodhpur

First Edition : 2021 Price : **₹ 700.00**

विषय-सूची

1. अप्रकाशित शिलालेखों की खोज और इनका सांस्कृतिक महत्त्व – डॉ. हुकमसिंह भाटी 01
2. हाड़ौती के अल्पज्ञात खीची शिलालेख – ललित शर्मा 05
3. मेवाड़ के कतिपय दुर्लभ अप्रकाशित शिलालेखों का समाज एवं संस्कृति में अवदान – प्रो. गिरीश नाथ माथुर 17
4. माण्डल गांव (मेवाड़) के कतिपय अप्रकाशित शिलालेख – प्रो. जे.के. ओझा 25
5. कानोड़ ठिकाने के अप्रकाशित शिलालेख – एक अध्ययन (समाज एवं संस्कृति के संदर्भ में) – डॉ. प्रियदर्शी ओझा 32
6. अर्बुद प्रदेश के अप्रकाशित शिलालेख एवं उनका सामाजिक व सांस्कृतिक महत्त्व – डॉ. राजेन्द्र शाह 41
7. Historical Significance of Water Bodies of Qasba Fatehpur (Shaikhawati): Study Based On Unpublished Inscriptions - Dr. Jibraeil 49
8. बीकानेर क्षेत्र के अप्रकाशित शिलालेखों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व – डॉ. राजेन्द्र कुमार 58
9. मेवाड़–मारवाड़ के अप्रकाशित शिलालेखों में समाज एवं संस्कृति– एक अध्ययन – डॉ. विक्रमसिंह भाटी 70
10. बीकानेर राज्य की गैर शासकीय वर्ग की छतरियों का अप्रकाशित शिलालेखों के सन्दर्भ में अध्ययन – डॉ. महेन्द्र पुरोहित 99
11. बीकानेर रियासत के शासकीय कर्मचारियों की छत्तरियों के शिलालेखों का ऐतिहासिक अध्ययन – डॉ. मुकेश हर्ष 106
12. नोहर एवं चूरू के कतिपय अप्रकाशित शिलालेखों में समाज एवं संस्कृति – डॉ. मीना कुमारी 113
13. जैसलमेर क्षेत्र के कतिपय अप्रकाशित शिलालेख – तनेसिंह सोढ़ा 120
14. पलायथा (कोटा) के अप्रकाशित अभिलेख एवं दग्ध स्थल के 133

स्थापत्य शिल्प का सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से समीक्षात्मक विश्लेषण– सूर्यवीरसिंह
15. चाणोद ठिकाने के अप्रकाशित शिलालेख : एक अध्ययन – डॉ. जितेन्द्रसिंह भाटी 144
16. मेड़ता क्षेत्र के अप्रकाशित पादुका अभिलेखों (पगलियों) का सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व – डॉ. सद्दीक मोहम्मद 148
17. मेड़ता रोड (फलौधी) ब्रह्माणी मन्दिर के अप्रकाशित शिलालेखों का धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व – श्रीनिवास शर्मा 153
18. मेड़ता क्षेत्र के अप्रकाशित शिलालेखों का समाज–संस्कृति में अवदान – डॉ. कालूखां देशवाली 158
19. भोपालगढ़ व नाड़सर के अप्रकाशित शिलालेखों का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. भरत देवड़ा 163
20. ओसियां के अप्रकाशित शिलालेख (मन्दिरों के विशेष सन्दर्भ में) – डॉ. उषा पुरोहित 172
21. बिलाड़ा क्षेत्र के अप्रकाशित शिलालेखों का समाज एवं संस्कृति में अवदान – राकेश रामावत 175
22. अरटिया एवं भाद्राजूण के अप्रकाशित शिलालेखों का सांस्कृतिक महत्त्व – डॉ. सुरेश कुमार 202
23. सोयला गाँव के अप्रकाशित अभिलेखों का सामाजिक–सांस्कृतिक महत्त्व – डॉ. दिनेश राठी 210
24. दशनाम संन्यासी मठों के शिलालेख एवं उनका सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व – सौरभ भारती 216
25. जोधपुर के कोरणा ठिकाने के अप्रकाशित शिलालेखों का समाज एवं संस्कृति में अवदान – सपना कुमारी 218
26. ईन्दावटी के अभिलेख एवं उनका सांस्कृतिक व सामाजिक महत्त्व – विरेन्द्रसिंह ईन्दा 224
27. शाहपुरा (भीलवाड़ा) के स्मारक स्थलों का विश्लेषणात्मक अध्ययन – कविता गौड़ 227
28. मारवाड़ के दशनाम मठों में स्थित अप्रकाशित शिलालेखों का धार्मिक व सांस्कृतिक महत्त्व – हुमा गोस्वामी 232

29. कूंपावत राठौड़ प्रतापसिंह का अप्रकाशित कुचेरा शिलालेख 236
– उपासना दाधीच
30. सालावास गाँव के कतिपय अप्रकाशित शिलालेख 238
– ममता शर्मा
31. सरेचाँ गांव के अप्रकाशित शिलालेखों में समाज एवं संस्कृति 242
– अजय शंकर
32. रबारी (राईका) समाज के मारवाड़ में प्राप्त कतिपय अप्रकाशित 250
शिलालेखों का सामाजिक एव सांस्कृतिक महत्त्व – सुखराम
33. ओगणा गांव का अज्ञात शिलालेख 255
– अजय मोची
34. समाज और संस्कृति में आसोप के शिलालेखों का महत्त्व 264
– सुरेन्द्र डांगी
35. राजस्थान के अल्पज्ञात फारसी शिलालेखों का सामाजिक– 269
सांस्कृतिक महत्त्व एवं उनका संरक्षण – शमा बानो

पलायथा (कोटा) के अप्रकाशित अभिलेख एवं दग्ध स्थल के स्थापत्य शिल्प का सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से समीक्षात्मक विश्लेषण

सूर्यवीरसिंह

भारतवर्ष अपने सांस्कृतिक रूपरेखा में पूर्ण सम्पन्नता लिए हुए है, यहाँ प्राचीन सभ्यताओं का सृजन हुआ है तथा विश्व भर में पनपी विभिन्न सभ्यताओं के मुकाबले यहाँ कि सभ्यताओं का जीवन के प्रति नजरिया काफी भिन्नता लिए हुए है। भारत भूमि में अभिलेख एवं विभिन्न प्रकार के चिन्ह उत्कीर्ण करने की एक विशेष परम्परा चलायमान रही है, जिसके पीछे विभिन्न प्रयोजन रहे हैं। इसी भारतवर्ष के एक महत्त्वपूर्ण भाग, जिसे पूर्व में राजपूताना व आज राजस्थान के रूप में पहचाना जाता है, इसका अपना एक विशेष गरिमापूर्ण सम्पन्न इतिहास रहा है और इसी इतिहास के लेखन में तथा गहनता से इसकी बारीकियों को समझने व शोध हेतु अभिलेखीय सामग्री की उपयोगिता तथा महत्त्व को किसी भी रूप में कम नहीं आंका जा सकता।

अभिलेखों एवं उससे संबंधित स्रोतों से तत्कालीन समय की भाषा शैली, लिपि, भाषा के साथ-साथ उस समय के सामाजिक व सांस्कृतिक जैसे गहन विषयों को मूल से समझने में काफी सहायता प्राप्त होती है, ये ज्ञान प्राप्ति के परस्पर मूल स्रोत हैं और इन्हीं के माध्यम से इतिहास लेखन में विशेष सहयोग प्राप्त होता है। इन अभिलेखों एवं संबंधित सहायक वास्तुशिल्प के माध्यम से समाज के सांस्कृतिक एवं सामाजिक आस्थाओं व प्रणालियों के स्तर एवं स्थिति को सरलता और विश्वसनीय रूप से जाना व परखा जा सकता है, चूंकि इन स्रोतों के साथ किसी प्रकार की पूर्वाग्रही छेड़छाड़ करना संभव नहीं है, इसी कारण अन्य उपलब्ध स्रोतों के लिए भी इनकी विशेष सहायक भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

इस प्रकार के अभिलेख हमें विभिन्न ऐतिहासिक स्थानों पर पर्याप्त संख्या में प्राप्त होते हैं, बशर्ते इस विषय को लेकर विद्वत्तापूर्ण दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक है। यह महत्त्वपूर्ण अभिलेख हमें कई महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थान जैसे कि विभिन्न धार्मिक स्थलों, दग्ध स्थलों, जल स्रोत जैसे कूप, वाव, कुंड, तालाब इत्यादि तथा

जीर्णोद्धार करवाये गये स्थान व कई अन्य ऐतिहासिक स्थलों पर प्राप्त होते हैं। इन अभिलेखों के विभिन्न प्रकार हैं जैसे कि गोवर्धन स्तम्भ लेख, कीर्ति स्तम्भ, प्रतिष्ठा अभिलेख, स्मारक लेख, सती लेख, राजाज्ञा अभिलेख, भूमिदान अभिलेख, गोचर अभिलेख आदि। अतः इस कथन में तनिक भी अनभिज्ञता नहीं रह जाती कि इस प्रकार के स्रोतों का वास्तविक इतिहास लेखन में कितना महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। प्रस्तुत विषय को ध्यान में रखकर जिस शिलालेख एवं स्थापत्य शिल्प का विश्लेषण किया गया है, वह कोटा राज्य के इतिहास से संबंधित है। यह स्थान कोटा राज्य का सबसे महत्त्वपूर्ण जागीरी ठिकाना पलायथा था, जो कोटा से 45 किलोमीटर पूर्व दिशा में स्थित है।

ऐतिहासिक संदर्भ में पलायथा के महत्त्व को समझने के लिए हमें मुगलकालीन इतिहास को भी दृष्टिगोचर करना होगा, जब मुगल सम्राट जहांगीर कश्मीर से वापिस लौट रहा था तब लाहौर के नजदीक उसका देहान्त हो गया था, उस समय बागी पुत्र खुर्रम अपने ससुर आसफ जहाँ की सहायता से शाही तख्त पर बैठ गया। जिसे उचित समय मानकर बूंदी राज्य के शासक राव रतनसिंह ने अपने पुत्र माधोसिंह को कोटा में अतिरिक्त आठ परगने मिलाकर शाहजहाँ से आदेश दिलवाकर कोटा का स्वतंत्र शासक व कोटा को स्वतंत्र राज्य घोषित करवा दिया, इससे पूर्व कोटा के शासक बूंदी नरेशों के अधीन थे तथा पूर्ण रूपेण स्वतंत्र नहीं थे। अब कोटा राज्य हाडा चौहानों का स्वतंत्र राज्य बन गया था।

कोटा के शासक माधोसिंह के पाँच पुत्र हुए - मुकुन्दसिंह, मोहनसिंह, जुंझार-सिंह, कन्हिराम और किशोरसिंह। जिसमें से मुकुन्दसिंह ने माधोसिंह के पश्चात् महाराजाधिराज कोटा का पद संभाला, मोहनसिंह और किशोरसिंह क्रमशः आठ सौ और चार सौ के मनसबदार थे। मोहनसिंह अपनी वीरता के कारण माधोसिंह के प्रिय पुत्र थे और प्रायः लड़ाइयों में अपने पिता के साथ रहा करते थे। इसी कारण उनको 84 गांवों के साथ पलायथा की जागीरी प्राप्त हुई। तीसरे पुत्र जूंझारसिंह को 21 गांवों के सहित कोटड़ा की व कन्हीराम को 27 गांवों सहित कोयला की जागीरी मिली तथा पाँचवे पुत्र किशोरसिंह को 24 गांवों सहित सांगोद की जागीरी दी गई।

इससे यह ज्ञात होता है कि पलायथा कोटा राज्य की सबसे बड़ी एवं समर्थवान जागीर थी तथा इसके जागीरदार मोहनसिंह माधोसिंह के सबसे प्रिय व काबिल पुत्र थे, जो अधिकतर समय युद्ध में पिता के साथ रहे। कोटा राज्य में दो प्रकार की जागीरी थी, देसथी और हजूरथी। इसमें देसथी जागीरदार राज्य में प्रायः अपने-अपने स्थान पर रहते थे, जो निकटतम गांवों में विद्रोह खड़ा न हो तथा शांति भंग को रोकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, जबकि हजूरथी दरबार के साथ राज्य द्वारा किए जाने वाले सैन्य अभियानों में शामिल होते थे।

पलायथा एक महत्त्वपूर्ण ठिकाना था। मोहनसिंह के पश्चात् उनके वंशजों में पलायथा ठिकाने का उपभोग : प्रतापसिंह > गोपालसिंह > कनकसिंह > संग्रामसिंह > रूपसिंह > अमरसिंह (प्रथम) > अजीतसिंह > फतेहसिंह > अमरसिंह (द्वितीय) > ओंकारसिंह ने किया।

पलायथा गांव के शिलालेख एवं स्थापत्य शिल्प की दृष्टि से निरीक्षण करने पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से एक महत्त्वपूर्ण स्थान दृष्टिगोचर होता है, जो एक दग्ध स्थल है। इस दग्ध स्थल में कुल तीन बड़ी छतरियां और नौ चबुतरे हैं व दो सतियों की चौकियां भी विद्यमान हैं जिसका प्रवेश द्वार पश्चिम दिशा से है। इन सभी स्थापत्य संरचना का संबंध यहाँ के जागीरदार परिवार से है। मोहनसिंह की छतरी के पास शिलालेखीय गोवर्द्धन स्तम्भ विद्यमान है वहीं दूसरी ओर इसके आस-पास में विभिन्न स्थापत्यों के पास इस प्रकार के शिलालेखों का अभाव है। यह स्थापत्य संरचना निम्न प्रकार से है -

1. मोहनसिंह की छतरी :-

मोहनसिंह जो माधोसिंह के द्वितीय पुत्र थे। इनकी छतरी के नजदीक शिलालेख गोवर्द्धन स्तम्भ प्राप्त हुआ है तथा इसका ध्यानपूर्वक समीक्षात्मक विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकल कर आता है कि इस छतरी का निर्माण संभावित तौर पर अमरसिंहजी प्रथम द्वारा करवाया गया था। इस छतरी की संरचना बलुआ पत्थर से की गई है, जिसकी चढ़ाई कुल सोलह सीढ़ियों की है। (छायाचित्र 1.4) पूर्ण राजपूत शैली में निर्मित यह छतरी यहाँ की सभी स्थापत्य संरचना में सबसे भव्य है। जिसके प्रवेश की सीढ़ियों के दोनों ओर तन के खड़े हाथियों को पत्थर में रिलीफ तकनीक में उकेरा गया है जिन पर महावत शूल लेकर बैठा है, इसी क्रम में छः सीढ़ियों के पश्चात् पुनः दोनों बाजू मूर्ति उकेरी गई है, जिसमें गणेश और दूसरी और हंस पर विराजी सरस्वती योगिनी की वेशभूषा में है तथा हाथ में वीणा धारण किए हुए है। आगे बढ़ने पर पुनः छः सीढ़ियों के पश्चात् बाएं अष्टभुजा दुर्गा तथा दाएं बाजू शिव व पार्वती को रिलीफ में उकेरा गया है।

इन दोनों रिलीफ को दर्शाने में विशेष शिल्प प्रतिभा का आभास होता है। दुर्गा जो सिंह पर आरूढ़ है (छायाचित्र 1.4) जिसे गतिमान अवस्था में दिखाया है तथा अष्टभुजा वाली दुर्गा को विभिन्न शस्त्र जैसे त्रिशूल, खंजर, तलवार, डमरू, कटार, चक्र तथा मुंड धारण किए हुए दर्शाया गया है। यहाँ विशेष बात यह है कि यह दृश्य काफी नाटकीय होने के साथ गतिशील भी है। नंदी काफी तनी हुई अवस्था में है, परंतु साथ ही गतिशील भी है, मानो शिव-पार्वती को अपने ऊपर बैठाकर काफी गौरवांवित अनुभव कर रहा है। (छायाचित्र 1.5) हालांकि शिव-पार्वती की रिलीफ काफी हद

तक खंडित हो चुकी है। इस छतरी के मध्य में अत्यंत खूबसूरत चौकी है जिस पर शिवलिंग पीठिका के समान ही पीठिका मौजूद है जो संगमरमर से निर्मित है, (छायाचित्र 1.3) परंतु विशेष यह है कि इस पीठिका पर शिवलिंग न होकर कुछ विशेष सांकेतिक चिन्ह दर्शाये गए हैं, जो अपने आप में सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इन सांकेतिक चिन्हों के मध्य में पगलिये हैं, जिसमें ऊपर की ओर चन्द्रमा और सूर्य के मुख उकेरे गए हैं। दोनों बाजू गदा, कमल का पुष्प, कटार, तलवार तथा नीचे की ओर ढाल व शंख उकेरे गए हैं, जो प्रतीकात्मक रूप से किसी देवता द्वारा ही धारण किए जाते हैं।

इस छतरी में कुल चौदह स्तम्भ हैं, जो शिल्प की दृष्टि से अधिक कलात्मक तो नहीं हैं, परन्तु छतरी की पूर्ण रूपरेखा में इसका विशेष योगदान है, छतरी के सभी स्तम्भ एक समान हैं, जो मूल से चौकोर हैं तथा मध्य से ऊपरी भाग में अष्टकोणीय हो जाते हैं। ब्रेकेट की रचना जरूरत के अनुसार बदली गई है तथा इन स्तंभों के ऊपर लिंटेल की सहायता से छतरी का ऊपरी भाग स्थिर किया गया है, जिसके मध्य से एक गुंबज को बनाया गया है जिसके ऊपर उल्टा कमल तथ अमलिका के ऊपर कलश की स्थापना की गई है। चारों कोण में छोटी घुमटियां संरचित की हैं जो गुंबज के समान ही प्रतीत होती है तथा सामने की ओर बंगाल शैली का गुंबज है जिस पर दो कलश अमलिका के ऊपर स्थापित किए गए हैं। छज्जा चारों ओर लगाया गया है। विशेष बात यह है यह छतरी के अग्र भाग में दाईं बाजू गोवर्द्धन स्तम्भ स्थापित है। (छायाचित्र 1.1) गोवर्द्धन स्तम्भ के मुख भाग पर गणपति की मूर्ति है तथा उसके पश्चात् लेख उत्कीर्ण है जो इस प्रकार से है-

।। श्री गणेसाय नम।। श्री गुरभो नम।। शुभ न्यमाऊ .... बीक्रमजीत संवत् 1893 साख साल थाहा न 1758 रे वरतमाने कसबा पलायथा पेमलचंद नंद गांव सुदा अजमेर सूं मलीक परथी पती ...... रज बाहा .... महाराजधीराज महारावजी श्री रामसीय जी मंत्री .... पतीराज श्री मेहन सीय जी ...... राज भाटी उमराव ...... आपजी श्री रूपसीय जी तसे पुत्र आपजी श्री ....दर सीय जी तस पुत्र आपजी श्री अमर सीय जी तस पुत्र आपजी श्री अजीत सीय जी कसय आपजी श्री अमर सीय जी हा ....पजी श्री जेताव जी बहु जी श्री राणी ...... जी .... जेठ सुदी 5 सुकरवार .... सत् सुभम सतु

उपर्युक्त गोवर्द्धन स्तम्भ वि.सं. 1893 का है तथा इसमें शाका का भी उल्लेख किया गया है। पंक्तियों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि मोहनसिंहजी के पश्चात् रूपसिंहजी, अमरसिंहजी, अजीतसिंहजी का नामोल्लेख हुआ है। साथ ही अमरसिंहजी की धर्मपत्नी जेतावतजी का भी उल्लेख है। जेतावतजी के उल्लेख के साथ ही तिथि का हवाला देते हुए जेठ सुदि 5 शुक्रवार दिया गया है। शिलालेख की अग्रिम पंक्तियों में अजमेर के नंद गांव के साथ ही मंत्री पद और उमराव भाटी का भी उल्लेख मिलता है। शिला पर उत्कीर्ण लेख पूर्णतया अस्पष्ट हो चुका है, जिसे बड़ी सावधानी से पढ़ने पर यह सूत्र उभर कर सामने आते हैं।

2. प्रतापसिंह की छतरी :-

मोहनसिंहजी के पश्चात् प्रतापसिंह पलायथा के जागीरदार बने। मोहनसिंह की छतरी के दाईं ओर प्रतापसिंह की छतरी का निर्माण हुआ है। इस छतरी के ऊपरी भाग में चारों कोण पर गूमटियां नहीं है और न ही मोहनसिंह की छतरी की भांति बंगाल शैली का गुंबज है। इसके अलावा प्रथम छतरी की भांति ही वास्तु रूप से संरचित है। परन्तु शिल्प की दृष्टि से इसमें कुछ भिन्नताएं हैं जैसे इसके स्तम्भ मोहनसिंह की छतरी की तुलना में अधिक अलंकृत हैं। मूल में चौकोर हैं जिसके चारों तरफ रिलीफ तकनीक में कुंभ उकेरे गए हैं। स्तम्भ के मध्य भाग के पश्चात् शाट अष्टकोणीय हो जाता है तथा पुनः इसके अर्द्ध भाग में षोडश कोणीय हो जाता है। जो उन्नातोदर पद्धति में उकेरे गए हैं। इसके ब्रेकेट्स भी काफी अलंकृत है, परन्तु जो मूल परिवर्तन यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य है वह छतरी के मध्य स्थित चौकी व शिवलिंग पीठिका है। यह चौकी काफी अलंकृत है। जिसके चारों ओर 16 चौकोर वर्ग बना कर उसमें रिलीफ पद्धति में पुष्प उकेरे गए हैं जो एक-दूसरे से भिन्नता लिए हुए हैं। इस चौकी पर एक पीठिका है जिस पर शिवलिंग निर्मित है। इसमें विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि हमें यहाँ पूर्व की तुलना में रूपभेद में काफी अन्तर मिलता है (छायाचित्र 2)। जहाँ मोहनसिंह की छतरी में मात्र सांकेतिक चिन्हों को उकेरा गया था वहीं यहाँ पर हमें त्रिआयामी शिवलिंग देखने को मिलता है। हालांकि आस्था और विश्वास की दृढ़ता में कोई अन्तर नहीं है। परन्तु यहाँ पर शिवलिंग पर चारों तरफ रिलीफ पद्धति में विभिन्न आकार उत्कीर्ण है। परन्तु वे मोहनसिंह की छतरी की तुलना में काफी भिन्नता लिए हुए है। इसमें कलश, भाला, वृक्ष, एक पुरुष कटार लिए हुए तथा स्त्री की आकृति उत्कीर्ण है। जिसका संबंध संभवतः इसी स्थान से रहा होगा। यह भी संभावना हो सकती है कि यह पुरुष आकृति प्रतापसिंह की तथा स्त्री की आकृति उनके साथ होने वाली सती की हो। परन्तु इस कथन को संभावना मात्र से ही समझा जाना चाहिए क्योंकि स्रोतों के अभाव में इस बात को पूर्ण सहमति से कहना संभव नहीं है।

3. गोपालसिंह की छतरी :-

गोपालसिंह जो प्रतापसिंह के पश्चात् पलायथा के जागीरदार बने। उनकी छतरी उपरोक्त दोनों की छतरी की तुलना में काफी सामान्य है। (छायाचित्र 3.1) इसमें विशेष शिल्प स्थापत्य संरचना अति सामान्य दृष्टिगोचर होती है। इसमें कुल 12 स्तम्भ हैं जिन पर लिन्टल्स की सहायता से एक गुंबज को स्थापित किया गया है। जिसमें ऊपरी भाग पर अमलिका है जिस पर कलश स्थापित किया गया है। वहीं छतरी के प्रांगण के मध्य स्थित चौकी सामान्य है और पूरी छतरी में विशेष अलंकरण दृष्टिगोचर नहीं होता, परन्तु चौकी के ऊपर शिवलिंग पर उपरोक्त प्रतापसिंह की छतरी की भांति ही शिवलिंग है। (छायाचित्र 3.2) परन्तु सांकेतिक चिन्ह काफी भिन्न है। जिसमें घोड़ा, वृक्ष, दो स्त्रियां व कटार धारण किए हुए पुरुष हैं। संभावना यह भी हो सकती है कि यह पुरुष गोपालसिंह व दोनों स्त्रियां उनके साथ हुई सतियों की हो। क्योंकि जानकारी के अभाव में इस विषय में अधिक विश्वसनियता से कुछ कहना संभव नहीं है, परन्तु इनके वंशजों का मानना है इस काल में एक साथ दो सतियों का होना बताया जाता है तो संभवतः वे गोपालसिंह के साथ ही सती हुई हों ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है।

4. अमरसिंह का चबूतरा :-

अमरसिंह का चबूतरा जो कि मोहनसिंह की छतरी के बाईं तरफ बना हुआ है। (छायाचित्र 4.1) जिसमें मोहनसिंह की छतरी की भांति ही शुरूआत की सीढ़ियों पर दोनों ओर हाथी उकेरे गए हैं। जिन पर महावत शूल लिये तन कर बैठे हैं तथा पाँच सीढ़ियों की चढ़ाई पर पूर्व की भांति गणेश और सरस्वती उत्कीर्ण है। इस चबूतरे के चारों किनारों पर हाथी पर बैठे महावत जो हाथ में शूल लिये हैं को उकेरा गया है तथा चबूतरे के कोण में अलंकृत पागे बनाए गए हैं। इसके अलावा यह चौकी स्थापत्य संरचना की दृष्टि से विशेष है जो षट्कोणीय है। इस पर एक छोटी चौकोर चौकी निर्मित है जिस पर डमरू के समान पीठिका है तथा उसके ऊपर संगमरमर पत्थर में कमल रूपी त्रिआयामी पीठिका बनी हुई है। इस पुष्प के मध्य मोहनसिंह की छतरी की भांति सांकेतिक चिन्ह उत्कीर्ण है। जिसके मध्य में पगलिये तथा ऊपरी भाग में सूर्य एवं चंद्रमा के मुख उत्कीर्ण हैं। वहीं बाएं बाजू ढाल और शंख तथा बाएं बाजू तलवार व खंजर और नीचे की ओर गदा व पुष्प रिलीफ तकनीक में उत्कीर्ण किए गए हैं।

5. बहादुरसिंह का चबूतरा :-

इस चबूतरे की स्थापत्य संरचना काफी नवीन है जो अमरसिंह के चबूतरे के पीछे बना है। यह स्थापत्य की दृष्टि से अत्यंत सामान्य है। इस चबूतरे पर षट्कोणीय

चौकी निर्मित है जिस पर पुनः चौकोर आकार की चौकी है, जिस पर सफेद संगमरमर का शिवलिंग स्थापित किया गया है।

6. फतेहसिंह का चबूतरा :-

इस चबूतरे की स्थापत्य संरचना काफी सामान्य है (छायाचित्र 5.1- अ) जिस पर दस सीढ़ियां बनी हैं तथा प्रवेश पश्चिम दिशा से है तथा मोहनसिंह की छतरी के पिछले भाग में बना हुआ है। जिसके ऊपर एक चौकोर चौकी है। इस शिवलिंग की पीठिका बलुआ पत्थर में निर्मित है, जिस पर संगमरमर का शिवलिंग स्थापित किया गया है।

7. अभयसिंह का चबूतरा :-

इस चबूतरे की स्थापत्य संरचना भी फतेहसिंह के चबूतरे के समान ही है तथा फतेहसिंह के दाईं बाजू पर बना हुआ है। (छायाचित्र 5.1- ब)

8. ओंकारसिंह का चबूतरा :-

इस चबूतरे की स्थापत्य संरचना फतेहसिंह के चबूतरे के समान है जो अभयसिंह के चबूतरे के दाईं और निर्मित है। (छायाचित्र 5.1- स)

चबूतरा संख्या 9, 10, 11, 12 के विषय में जानकारी अज्ञात है। यह प्रामाणिक तौर पर कहना कठिन है कि यह किसके हैं। इसमें चबूतरा सं. 9 गोपालसिंह जी के दाईं ओर बना हुआ है। चबूतरा सं. 10 जो कि दाईं ओर है तथा थोड़ा वक्र है। चबूतरा सं. 11 (छायाचित्र 6.1) प्रतापसिंहजी के सामने बना है तथा चबूतरा सं. 12 (छायाचित्र 6.2) मोहनसिंह की छतरी के सामने, परन्तु ये सभी उपरोक्त ज्ञात चबूतरों की तुलना में आकार में बड़े हैं तथा अधिक ऊँचाई पर हैं तथा सभी पर शिवलिंग की स्थापना की गई है। इनके साथ गोवर्द्धन स्तम्भ स्थित हैं परन्तु इन पर लेख उत्कीर्ण होने के अभाव में इनकी पहचान अज्ञात है। हालांकि इनकी स्थापत्य संरचना देखने पर ज्ञात होता है कि उपरोक्त दिए चबूतरों की तुलना में ये काफी पुराने हैं।

चौकी संख्या 13 तथा 14 सतियों की चौकियां हैं जिन पर दो देवलियां स्थित हैं, परन्तु किसी प्रकार के अभिलेख अथवा अन्य स्रोत के अभाव में विशेष जानकारी का अभाव है, परन्तु आम लोगों की मान्यता के अनुसार ये गोपालसिंह के साथ सती हुई थीं, जिसका अनुमान हम गोपालसिंह की छतरी में उत्कीर्ण चिन्हों से भी लगा सकते हैं।

सामाजिक व सांस्कृतिक महत्त्व –

प्राचीन काल से ही इस प्रकार के स्थानों का विशेष महत्त्व रहा है, ये समसामयिक काल के मूल स्रोतों के साथ अन्य कई पहलुओं पर अपना महत्त्व दर्शाते हैं, राजस्थान का इतिहास इस बात का साक्षी है कि किस प्रकार से यहाँ के शासकों के साथ प्रजा का एक गहरा जुड़ाव रहा है। किसी भी समाज का अनुवांशिक कूट-निबद्ध में उस समाज के सुविकास की व्याख्या होती है। इस प्रकार के दग्ध स्थल समाज के विकसित स्तर व उनकी मान्यताओं को दर्शाते हैं, पलायथा के इन छतरियों के विषय में वहाँ के लोगों की विशेष आस्था रही है। इस स्थान के लिए उनका एक प्रचलित उच्चारण है – बाबाईसा महाराज तथा यहाँ का समाज इन्हें लोक देवता के रूप में मान्य रखता है। यहाँ आने वाले लोग अधिकतर बारां, कोटा, झालावाड़, बूंदी और पूर्वी मध्यप्रदेश से है, जिनमें मुख्यतः राजपूत, माली (सैनी), धाकड़, गरासिया समुदाय से हैं तथा उनके लिए यह स्थान पूज्य है।

इस स्थान पर मोहनसिंह मुख्य रूप से आस्था के प्रतीक हैं। शोध के दौरान कुछ लोगों से पूछे गए सवालों तथा उनके जवाबों से यह ध्यान में आता है कि किस प्रकार से यहाँ के सामाजिक ढाँचे में इन आस्थाओं की जड़ें कितनी गहरी हैं।

लोगों के कथन :-

1. **प्रभुलाल** (पुजारी, जाति ब्राह्मण, उम्र 72) :- मैं इनकी सेवा भगवान् के समान करता हूँ, यह हमारे राजा भी थे और रक्षक भी। प्रजा का संतान की तरह ख्याल रखते थे इसलिए लोग यहाँ आज भी भारी संख्या में आते हैं।
2. **अंशुराजसिंह** (जाति राजपूत, उम्र 23) :- ये हमारे पूर्वज थे। हमारी वंश परंपरा के अनुसार हम इनकी पूजा करते हुए आ रहे हैं।
3. **धनराज** (जाति माली, उम्र 58) :- हम यहाँ हर बार फसल बोने से व अच्छी फसल होने के बाद फसल में से कुछ हिस्सा यहाँ भोग में चढ़ा कर जाते हैं।
4. **रामफल** (जाति गरासिया, उम्र 45) :- हमारे लिए यही भगवान् हैं। हम भगवान् की जगह इनकी पूजा करते हैं। हमारी इन पर अखंड आस्था है।

उपरोक्त कथन विभिन्न जातियों की आस्था तथा उससे जुड़े विश्वास की गहनता का आभास देता है, जिससे ज्ञात होता है कि किस प्रकार इस प्रकार के स्थान विभिन्न जातियों और समाज को आपस में जोड़ने का कार्य करते हैं। हम कह सकते हैं कि इस प्रकार के स्थानों का राजस्थान की आत्मा से संबंध है जो प्रेरणा, त्याग, समर्पण और प्रेम की अद्भुत मिशाल है।

न सिर्फ इतना अपितु इन शिल्प कला एवं स्थापत्य को देखकर तथा उत्कीर्ण चिन्हों तथा अभिलेखों पर शोध करने पर यह भी ज्ञात होता है कि तत्कालीन समय में क्या प्रचलन में रहा होगा, उनकी वेशभूषा, पूजा पद्धति आदि। वहीं दूसरी ओर ऐसा

माना जाता है कि जब कोई स्त्री सती होती थी तो उससे पहले वह सोलह शृंगार करती थी। इसी कारण जब पलायथा की एक घटना के अनुसार यहाँ के राजपरिवार की स्त्रियाँ जब सती होने जा रही थीं, उस समय उनके पुत्र ने माता के मोह वश मेहंदी तथा बहु ने नील को अपने पास छुपा लिया था ताकि वे सोलह शृंगार न कर सकें तथा उन्हें सती होने से रोका जा सके। परन्तु इस पर भी वे नहीं माने तथा सती होने का अपना प्रण पूरा किया। उसी परम्परा का निर्वाह करते हुए पलायथा के परिवार में आज भी पुरुष मेहंदी का तथा स्त्रियाँ नील का प्रयोग कभी नहीं करतीं। संभवत: यह सतियाँ गोपालसिंह के साथ दर्शायी गई सतियों के विषय में होगा। इस प्रकार की परम्पराओं से जुड़ाव तथा उसमें छुपी श्रद्धा का निर्वाह करना समाज में अपने इतिहास के प्रति विश्वास को दर्शाता है। उपरोक्त स्रोतों से हमें दग्ध स्थलों तथा उनके महत्त्व और उनमें उत्कीर्ण चिन्हों के विशेष महत्त्व का ज्ञान होता है।

सह आचार्य, स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, आर्ट एण्ड डिजाईन, आई.टी.एम.,
एस.एल.एस, बड़ौदा यूनिवर्सिटी, बड़ौदा (गुजरात)

ग्रन्थसूची :-

1. डॉ. जगद नारायण, डॉ. मथुरालाल शर्मा कृत कोटा राज्य का इतिहास, भाग-1, द्वितीय संशोधित संस्करण : 2008, जोधपुर, राजस्थानी ग्रन्थागार।
2. पलायथा (कोटा) ठिकाने की शोध यात्रा 21-22 नवंबर, 2019

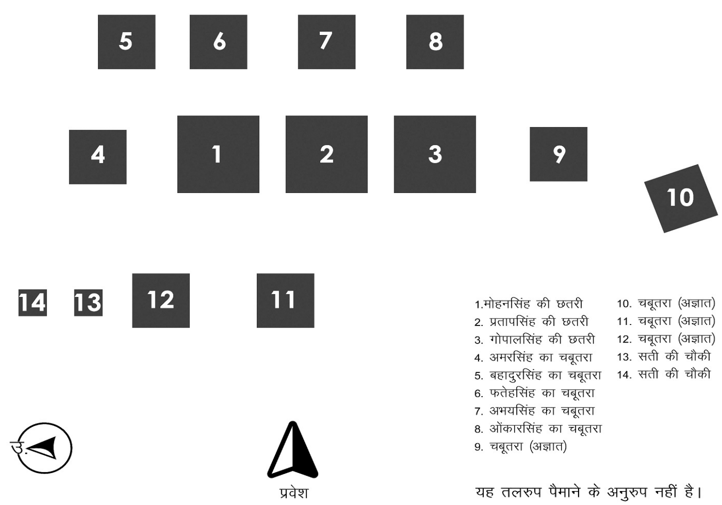

पलायथा के दग्ध स्थल के स्थापत्य संरचना का तलरुप

1.1 गौवर्धन स्तम्भ

1.2 मोहनसिंह की छतरी

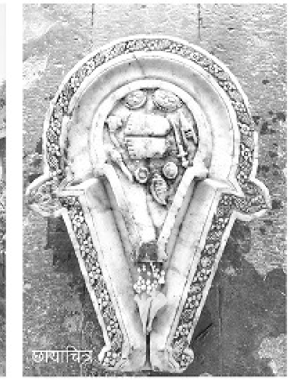

1.3 पीठिका(मोहनसिंह की छतरी)

1.4 दुर्गा

1.5 शिव–पार्वती

2 शिवलिंग (प्रतापसिंह की छतरी)

3.1 गोपालसिंह की छतरी

3.2 शिवलिंग (गोपालसिंह की छतरी)

4.1 अमरसिंह का चबूतरा

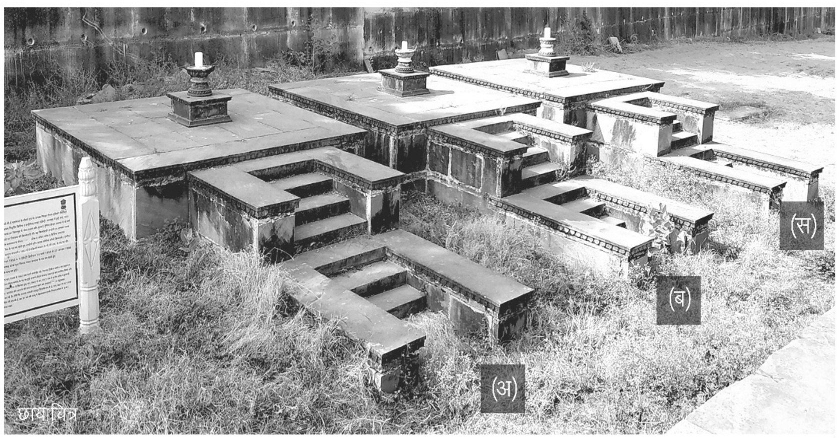

5.1 (अ) फतेहसिंह का चबूतरा (ब) अभयसिंह का चबूतरा (स) ओंकारसिंह का चबूतरा

6.1 चबूतरा (अज्ञात)

6.2 चबूतरा (अज्ञात)

चाणोद ठिकाने के अप्रकाशित शिलालेख : एक अध्ययन

डॉ. जितेन्द्रसिंह भाटी

चाणोद ठिकाना मारवाड़ का प्रमुख ठिकाना रहा था। यह ठिकाना जोधपुर से 120 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। जो पूर्व में गोडवाड़ क्षेत्र के अन्तर्गत रहने के कारण मेवाड़ राज्य के स्वामित्त्व में था। जोधपुर के महाराजा विजयसिंह के समय यह ठिकाना मारवाड़ में सम्मिलित हो गया था। यहाँ के ठिकानेदार मेड़तिया राठौड़ों की प्रतापसिंघोत शाखा से हैं। इस ठिकाने की कुल रेख 31000) और इसके अन्तर्गत कुल गांव 23 थे। इस ठिकाने से चाणोद के जागीरदारों के अलावा कई महत्त्वपूर्ण अप्रकाशित शिलालेख खोजे गए, जिसका विवरण अग्रलिखित है –

ठाकुर सिवसिंह का देवली अभिलेख

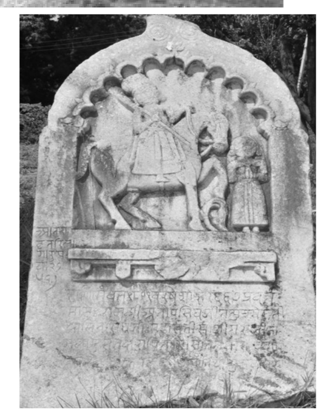

शिलालेख का मूल पाठ इस प्रकार है –

।।...... संवत 1801 वरषे शाके 1667 प्रवर्त्तमाने: राजश्री अनोपसिंघजी तत्पुत्र मेडतीया सिवसिघजी: महा सती सोनीगरी जी नाम लार सत करापित मासोतममासे वैशाष मासे .... 9 तिथो श्रुक्र वासरे

अतरा छतरी लागा रूपीया 2751)